- अस्वस्थ पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग स्थान पर रखना चाहिए।
- जिस स्थान पर पशु मरा हो उस स्थान को कीटनाशक दवाइयों से साफ करना चाहिए।
- रोग की संभावना होने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए ।
- गला घोंटू रोग से बचाने के लिए हर साल समय पर टीकाकरण अवश्य कराना चाहिए।

प्रशासनिक भवन

शैक्षणिक भवन

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : 0510-2730808
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशितः
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2024/97

गला घोंटू रोग के लक्षण एवं उपचार

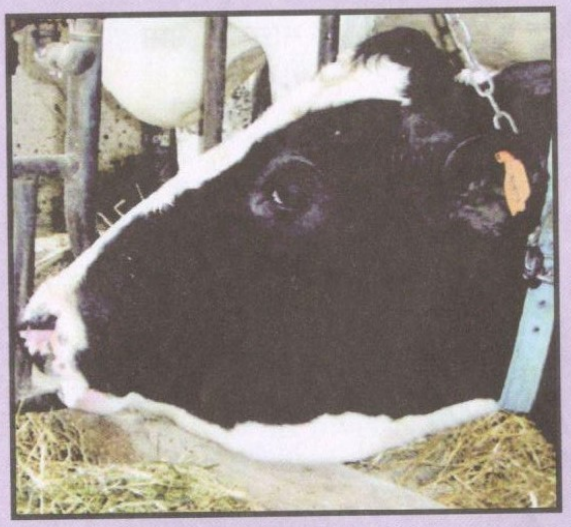

अमित सिंह विशेन
गौरव कुमार
प्रमोद कुमार सोनी
एवं
वी.पी. सिंह

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

गला घोंटू एक जीवाणु रोग है जो मुख्य रूप से मवेशियों को प्रभावित करता है। यह रोग एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पशुधन की मृत्यु का एक महत्वपूर्ण कारण है। इस रोग को साधारण भाषा में गलघोंटू के अतिरिक्त 'घूरखा', 'घोंटुआ', 'अषढ़िया', 'डकहा' आदि नामों से भी जाना जाता है। नैदानिक लक्षणों में आमतौर पर बुखार और अवसाद से लेकर कुछ घंटों से लेकर कुछ दिनों के भीतर पशु की मृत्यु हो जाती है। इस रोग का प्रकोप विशेष रूप से बरसात के मौसम में आम होता है।

रोग के लक्षण:

- भैंस आमतौर पर गायों की तुलना में गला घोंटू के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं एवं बुखार, सुस्ती और चलने–फिरने में अनिच्छा जैसे नैदानिक लक्षणों के साथ बीमारी का अधिक गंभीर रूप दिखता है ।
- मुँह और नाक से तरल स्राव निकलता है और ग्रसनी क्षेत्र में सूजन हो जाती है, ये सूजन ग्रीवा क्षेत्र से छाती तक फैल जाती है।
- पशु को साँस लेने में परेशानी आती है और पशु घुर्र–घुर्र की आवाज करने लगता है एवं जानवर की आमतौर पर पहले लक्षण दिखाई देने के 6–24 घंटे में मृत्यु हो जाती है।

रोग का उपचार:

- प्रकोप के दौरान जानवरों के बुखार की निगरानी करना और बुखार से पीड़ित जानवरों का तुरंत इलाज करना चाहिए।
- एंटीबायोटिक्स केवल तभी प्रभावी होते हैं जब उन्हें नैदानिक लक्षणों की शुरुआत के तुरंत बाद शुरू किया जाता है।

टीकाकरण:

- टीकाकरण से यह रोग नियंत्रित किया जा सकता है। एक बार टीकाकरण से पशु में छह महीने से एक साल तक की प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न हो जाती है।

चित्र 1: जबड़े के नीचे सूजन

- गला घोंटू वैक्सीन ब्रॉथ, एलम अवक्षेपित एवं एडजुवेंट वैक्सीन के रूप में आती है।

नियंत्रण और रोकथाम:

- गलघोंटू रोग की पुख्ता जांच होने पर सर्वप्रथम संदेहात्मक वस्तु जैसे कि दुग्ध एकत्र करने का पात्र, वाहन एवं अन्य यंत्रों को हल्के अम्ल, क्षार या जीवाणु नाशक द्रव्य से साफ करना चाहिए।
- बाड़े में 0.5–1% फिनॉल या 2–4% सोडियम कार्बोनेट का उपयोग कर साफ सफाई करना चाहिए।
- पशुओं से उनकी क्षमता के अनुसार ही काम लेना चाहिए ताकि पशु तनाव में न आएं और इस रोग का खतरा उन्हें कम से कम हो।
- प्रभावित क्षत्रों में वाहनों एवं पशु की आवाजाही पूर्णतयः रोक देना चाहिए।

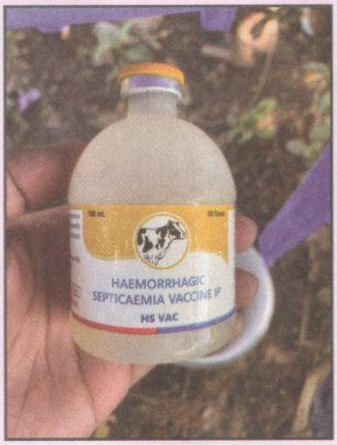

चित्र 2: गला घोंटू वैक्सीन

- पशुओं को छायादार तथा सूखे स्थान पर ही बाँधना चाहिए जिससे अचानक हुई भरी वर्षा में भी पशु भीगे नहीं।